**ओ३म्**

**‘वेदों का सावैभौमिक महत्व एवं प्रभाव’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आज का संसार विज्ञान की उपलब्धियों से रचा व बना प्रतीत होता है जिसमें मध्यकाल व उसके बाद उत्पन्न अनेक मत-मतान्तरों सहित ऋषि दयानन्द द्वारा प्रचारित ईश्वरीय ज्ञान वेद पर आधारित वैदिक धर्म भी प्रचलित हैं। वेदों के बाद विश्व का सबसे प्राचीन मत पारसी मत है जिसकी धर्म पुस्तक का नाम जन्दावस्ता है। ईरान में यह मत तीन से चार हजार वर्ष पूर्व अस्तित्व में आया और वहां प्रचलित होकर विश्व के अनेक भागों में फैला। भारत में इससे पूर्व वैदिक धर्म प्रचलित था। वैदिक धर्म वेदों की शिक्षाओं, मान्यताओं और सिद्धान्तों पर आधारित है। परीक्षा करने पर वेदों की सभी शिक्षायें, मान्यतायें व सिद्धान्त आज के वैज्ञानिक युग में भी न केवल पूर्णतः सत्य हैं अपितु सभी प्रचलित मत-मतान्तरों की तुलना में संसार के लोगों के लिए सबसे अधिक उपादेय एवं सर्वात्रिक उन्नति के योग्य हैं। वेद क्या हैं? वेद ज्ञान को कहते हैं। वेद चार हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद। यह वेद वह ज्ञान है जो सृष्टि के आरम्भ में, सृष्टि वा ब्रह्माण्ड की रचना सम्पन्न हो जाने के बाद, मानव की उत्पत्ति होने पर सृष्टि के रचयिता व कर्ता सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सच्चिदानन्दस्वरुप ईश्वर के द्वारा चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा के हृदय में प्रेरणा द्वारा प्रदान किया गया था। ईश्वर सर्वज्ञ अर्थात् ज्ञानस्वरुप व समस्त विद्याओं का भण्डार है, अतः उसी के द्वारा आदि मनुष्यों को ज्ञान की प्राप्ति सम्भव है। हम दूसरों से संवाद करने के लिए आत्मा के द्वारा अपनी वाणी से अपनी बात का सम्प्रेषण करते हैं। इसका कारण दो व अधिक मनुष्यों का पृथक पृथक स्थानों में होना होता है लेकिन यदि हमें स्वयं से बात करनी हो या चिन्तन-मनन करना हो तो हम अपनी आत्मा व मन में ही विचार करते हैं जिसमें भाषा का प्रयोग तो होता है परन्तु उसे मुंह से बोला नहीं जाता। ईश्वर सर्वव्यापक एवं सर्वान्तर्यामी होने के कारण हमारी व सभी प्राणियों की जीवात्माओं के भीतर भी विद्यमान है। अतः उसे हमसे संवाद व अपना ज्ञान देने के लिए बोल कर ज्ञान देने की आवश्यकता नहीं होती। वह अपनी बात हमें हमारी आत्मा में प्रेरणा द्वारा बता देता व स्थापित कर देता है। इसी प्रकार से सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने मनुष्यों को परस्पर कर्तव्य व अकर्तव्य तथा सृष्टिगत पदार्थों के नामों व संज्ञाओं से परिचित कराने के लिए वेदों का ज्ञान चार ऋषियों के माध्यम से दिया था। इसे विस्तार से जानने के लिए जिज्ञासुओं को ऋषि दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करना चाहिये।

 वेदों की उत्पत्ति अर्थात् चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान मिलने के बाद उन्होंने ब्रह्मा नाम के पांचवे ऋषि को चारों वेदों का ज्ञान देकर, उसके पश्चात इन सबने शेष स्त्री पुरुषों को उसका अध्ययन कराया जिससे सृष्टि की आदि व प्रथम सन्तति को ईश्वर प्रेरित वैदिक घर्म अर्थात् कर्तव्य व अकर्तव्यों सहित सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त हो गया था। वेदों व इतिहास के मर्मज्ञ ऋषि दयानन्द ने तीन हजार से अधिक प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल से कुछ काल पूर्व तक वैदिक शिक्षायें ही धर्म हुआ करती थी। उन्होंने अनुसंधान कर यह तथ्य भी प्रकट किया है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सत्य विद्याओं की पुस्तक व ग्रन्थ होने से वेदों के सम्मुख इतर मनुष्यकृत पुस्तकों का महत्व दूसरे स्थान पर होता है यदि वह वेदानुकूल हो। प्राचीन काल में बनायें गये ऋषियों द्वारा वेदों के व्याख्या, भाष्य आदि व व्याकरण ग्रन्थों का महत्व निर्विवाद रूप से होता है परन्तु उन सबका वेदों के अनुकूल होना अनिवार्य है। सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों की बुद्धि शुद्ध व पवित्र होने के कारण वेदों के सहायक व्याख्या व व्याकरण आदि ग्रन्थों की आवश्यकता नहीं थी परन्तु कालान्तर में बुद्धि की क्षमता में कमी आने के कारण वेदों के 6 अंग, 6 उपांग कहे जाने वाले ग्रन्थों का अध्ययन आवश्यक हो गया जिसमें मनु के उपदेशों सहित अनेक उपनिषद ग्रन्थ भी सम्मिलित हैं। वेदों के मुख्य चार विषय ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान हैं। हमें अपनी आत्मा, ईश्वर व इस सृष्टि का यथार्थ ज्ञान प्रिय व आवश्यक है उसी प्रकार से वेदों के ज्ञान के बिना मनुष्य को यथार्थ ज्ञान न मिलने से जीवन की यथार्थ उन्नति नहीं होती। ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति, सृष्टि, पुनर्जन्म, ईश्वरोपासना, यज्ञ, माता-पिता-आचार्य एवं विद्वानों के प्रति कर्तव्य एवं व्यवहार आदि अनेकानेक विषयों का ज्ञान वेदों से भली भांति होता है जिसका दिग्दर्शन महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश सहित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि अपने अनेक ग्रन्थों में कराया है। वेदों का ज्ञान पूर्ण एवं सत्य होने के कारण उनकी यथार्थ व्याख्या से इतर किसी अन्य मत व धर्म की पुस्तक की किसी मनुष्य को कोई आवश्यकता नहीं है। सृष्टि के आरम्भ से ही वेदों का अध्ययन कर धर्म सहित सभी विषयों को जाना जाता रहा है। इसमें कभी किसी को कोई कठिनाई नहीं आई। वेदों में सभी विद्यायें संक्षेप व बीज रूप में हैं जिनका अध्ययन कर इच्छित विषय का विस्तार व उन्नति की जा सकती है। इसके लिए ईश्वर ने मनुष्य को मानसिक, आत्मिक व बौद्धिक क्षमतायें प्रदान की हुई हैं। लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व महाभारत के भीषण युद्ध के बाद वैदिक धर्म का यथार्थ स्वरुप विलुप्त हो गया था जिसे महर्षि दयानन्द ने अपनी विद्या व अपूर्व पुरुषार्थ से देश व विश्व को सुलभ कराया। गायत्री मन्त्र भी वेदों का एक मन्त्र है और इसके समान व अन्य अनेक उपयोगी सहस्रों मन्त्र वेद में हैं। वेदों के मन्त्रों का संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी भाषाओं में महर्षि दयानन्द और अनेक आर्य विद्वानों का भाष्य व अनुवाद भी सम्प्रति उपलब्ध है जिसे कोई भी मनुष्य पढ़कर वेद के गूढ़ रहस्यों को जान सकता है। अतः मनुष्य जीवन में सुख व शान्ति सहित उसकी लौकिक व पारलौकिक उन्नति अर्थात् निःश्रेयस व मोक्ष प्राप्ति में वेदों का सर्वोपरि योगदान है जिसे वेद व वैदिक साहित्य के अध्ययन से इतर किसी अन्य साधन से जाना व समझा नहीं जा सकता।

 वेदों के प्रभाव पर भी कुछ चर्चा कर लेते हैं। महाभारत काल व उसके बाद देश का पतन आरम्भ हो गया था। महाभारत युद्ध में जान व माल सहित हमारे अनेक विद्वानों के काल कवलित होने से देश की भारी क्षति हुई थी। इस कारण देश की शिक्षण व समाज व्यवस्था कुप्रभावित हुई जिससे अज्ञान उत्पन्न होकर देश व विश्व में अन्धकार छा गया। समय के साथ यह बढ़ता रहा और ऐसा समय आया कि जब वेदों के शब्दों के रहस्यों व गहन गम्भीर अर्थों के अनध्याय से विस्मृति के कारण उनके मिथ्या अर्थों को मानकर समाज में व्यवहार होने लगा। सबसे अधिक विकार गोमेघ, अश्वमेघ, अजामेघ आदि यज्ञों के रूप में हुआ जहां पूर्णरूपेण हिंसारहित यज्ञों में गाय, घोड़े, भेड़ व बकरी को मार कर आहुतियां दी जाने लगी। इसकी प्रतिक्रिया में नास्तिक बौद्ध व जैन मतों का आविर्भाव हुआ। दूसरी ओर वैदिक मत भी इसके अनुयायियों के अज्ञान व स्वार्थों के कारण अवैदिक व मिथ्या सिद्धान्तों का वाहक बन गया जिसे बाद में पौराणिक व अन्य अनेक नामों से जाना जाता है। यह क्रम चलता रहा और देश व विश्व में समय समय पर नाना प्रकार के अविद्याजन्य मतों की संख्या में वृद्धि होती रही। इन सभी मतों में अधिकांश शिक्षायें व सिद्धान्त वेदों के ही थे। केवल कुछ बातें व मान्यतायें अज्ञानता, अल्पज्ञता व स्वार्थ आदि के कारण वेद विरुद्ध स्वीकार कर ली गईं। आज भी यदि देखें तो वेद से इतर मतों में सत्तर से अस्सी प्रतिशत व इससे कुछ अधिक मान्यतायें वेदों की मूल भूत मान्यतायें ही किसी न किसी रुप में विद्यमान हैं। शेष बातें उनके मताचार्यों व प्रचारकों की अपनी अपनी हैं जो अपने हित-अहित को ध्यान में रखकर सुविधा व अनेकानेक लाभों की दृष्टि से प्रचारित की जाती हैं। इन बातों के कारण मनुष्य **‘‘वसुधैव कुटुम्बकम्”** की उच्च व पावन भावना से दूर होकर परस्पर एक दूसरे के विरोधी वा शत्रु बन गये हैं। इसे इस रूप में भी देख सकते है कि स्तात्कोत्तर कक्षा में अध्ययनरत वा शिक्षित युवाओं को किसी धर्म एक विषय पर निबन्ध लिखने को दिया जाये तो अधिकांश को तो 33 से 50 प्रतिशत अंक ही प्राप्त होंगे और शेष कुछ लोगों को 50 से 80 व अधिक से अधिक 90 प्रतिशत अंकों के बीच अंक प्राप्त होंगे। यह उदाहरण बतलाता है कि सभी मनुष्यों का ज्ञान का स्तर समान नहीं होता। अधिक लोग कम ज्ञानी होते हैं और बहुत कम लोग कुछ कुछ ज्ञानी होते हैं जिनका स्तर भी 50 से 80 या 90 प्रतिशत तक ही पहुंच पाता है। यही स्थिति मध्यकाल में हमें धर्म व मत-संस्थापकों की भी कुछ कुछ लगती है। यह मनुष्य की जीवात्मा की अल्पज्ञता के कारण होता है। कोई मनुष्य कितना भी ज्ञान प्राप्त कर ले परन्तु वह सदैव अल्पज्ञ ही रहता है और उसके ज्ञान में कुछ न कुछ न्यूनता रहती ही है। यही स्थिति हमारे पूर्व सभी मताचार्यों की रही है व वर्तमान मताचार्यों की भी है। वेदेतर मतों की अधिकांश बातें सत्य होने पर भी उनकी अनेक व बहुत सी बातें सत्य के विपरीत असत्य व सत्यासत्य मिश्रित हैं।

 वेदों का महत्व इस कारण है कि महाभारत काल तक संसार में वेद वा वैदिक धर्म ही एकमात्र धर्म था जो 1.96 अरब वर्षों से अधिक समय तक अपने शुद्ध रूप में प्रचलित रहा। इस अवधि में वैदिक संस्कृति ही विश्व में प्रचलित थी। वेदों में कहा भी गया है कि **‘सा संस्कृति प्रथमा विश्ववारा’** अर्थात् वैदिक संस्कृति ही विश्व की प्रथम संस्कृति है। मनुस्मृति ने प्राचीन काल में घोषणा की कि **‘वेदऽखिलो धर्ममूलम्’** अर्थात् वेद व इसका ज्ञान ही अखित वा समस्त विश्व में धर्म का मूल है। सत्य बोलना चाहिये असत्य नहीं, धर्म पर चलना चाहिये अधर्म पर नहीं, माता-पिता-आचार्य व विद्वानों का सम्मान, सेवा व उनके प्रति प्रियाचारण करना चाहिये। अविद्या का नाश और विद्या, ज्ञान व श्रेष्ठ बातों की उन्नति और प्रचार करना चाहिये। ऐसी अनेक बातें हैं जिन्हें सभी मत व धर्म मानते हैं और यह वेदों से ही प्रचाारित होकर अन्य मत-मतान्तरों में गईं हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्य ही कहा है कि मत-मतान्तरों में जो-जो सत्य है वह सब वेदों से वहां पहुंचा है और उनमें जो असत्य व मिथ्याचार है वह सब उनका व उनके आचार्यों का अपना है। पं. चमूपति जी और प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने वेदों के इस्लाम पर प्रभाव पर पुस्तक लिखी है। अब वह ईसाई मत पर वेदों के प्रभाव पर भी पुस्तक लिखना आरम्भ कर रहे हैं। पं. गंगा प्रसाद, मुख्य न्यायाधीश, टिहरी राज्य की पुस्तक **‘धर्म का आदि स्रोत’** भी इस विषय की महत्वपूर्ण पुस्तक है जिसमें सभी मतों पर वैदिक मत के प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है। सभी मतों पर वैदिक मत का प्रभाव सिद्ध होता है। अतः सभी मत-मतान्तर वेदों से प्रभावित हैं अर्थात् उनमें वेदों की शिक्षायें, मान्यतायें व सिद्धान्त शब्द व वाक्यभेद से विद्यमान हैं। हमने यह कुछ संक्षेप में वर्णन किया है।

 वेद विश्व साहित्य में सर्वाधिक महिमाशाली ज्ञान वा ग्रन्थ हैं जिसकी तुलना में संसार का कोई ग्रन्थ नहीं है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक होने के साथ सभी विषयों का यथार्थ ज्ञान वेदों से होता है। वेदों की महिमा अपरम्पार है। वेदों से सभी मत-मतान्तरों के ग्रन्थ प्रभावित हैं। इसे जानने के लिए ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों व विचारों का अध्ययन उपयोगी होगा। इसी के साथ हम इस लेख को विराम देते हैं। इति शम्।

 **-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**